हिन्दी काव्य में अनुवाद की समस्याएँ

डॉ. आशिष कुमारी कान्ता

प्राचीन काल से ही अनुवाद का सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में अनुवाद की भूमिका अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण हो गयी है। अनुवाद हमारी सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक आवश्यकता बन गयी है। देशी–विदेशी भाषिक समाज के सृजनात्मक साहित्यानुभूति के लिए, विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के लिए, उद्योग–व्यापार के लिए, पर्यटन के लिए, तथा बौद्धिक विमर्श आदि के विकास में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

'अनुवाद' शब्द का संबंध 'वद्' धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना या कहना'। 'शब्दार्थ चिंतामणि' कोश में अनुवाद का अर्थ 'प्राम्तस्य पुनः कथने' या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने' अर्थात् पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना आदि दिया गया है। वैदिक संस्कृत, वृहदारण्यक उपनिषद्, निरूक्त, पाणिनि, मीमांसा, न्यायसूत्र न्यायदर्शन, जैमिनीय न्यायमाला, मनुस्मृति आदि ग्रंथो में अनुवाद का प्रयोग दुहराने अथवा पुनः कथन के अर्थ में ही हुआ है। आजकल 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के ट्रांसलेशन के पर्याय के रूप में परिनिष्ठित हो गया है। अंग्रेजी कोश के अनुसार 'ट्रांसलेशन' का सीधा अर्थ है– एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना।